

M.S.B
कक्षा : 10
हिन्दी – 2016

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

सूचना : शुद्ध भाषा एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है।

1. (अ) निम्नलिखित विधानों के साथ दिए गए विकल्पों में से पठित गद्यपाठों के आधार पर सही विकल्प जोड़कर प्रत्येक विधान पूर्ण वाक्य में लिखिए : 2

(1) पतंजलि ने चित्तशुद्धि के लिए

(अ) महाभाष्य लिखा।

(ब) वैद्यक लिखा।

(क) योगसूत्र लिखा।

(2) लेखक को अक्सर

(अ) म. गांधीजी का जला हाथ याद आता है।

(ब) स्वयंसेवक दल याद आता है।

(क) बिना हैंडल की गरम पानी की बाल्टी याद आती है।

- (आ) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पठित गद्यपाठों में प्रयुक्त शब्दों से कीजिए। प्रयुक्त शब्द अधोरेखांकित कीजिए : 3

(1) पलाश _____ परिवार का वृक्ष है।

(2) उस समय वह _____ करने के मूड में था।

(3) किसी जमाने में एक अत्यंत _____ पहाड़ी कन्या थी।

(इ) निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर पठित गद्यपाठों के आधार पर केवल एक-एक वाक्य में लिखिए : 3

- (1) लेखक के अनुसार किसके बगैर मनुष्य नहीं है?
- (2) कसाई ने भेड़ किससे मोल ली थी?
- (3) मुख्यमंत्री जी के पाँच मिनट किसकी प्रशंसा में निकल गए?
- (4) विनायक बाबू के झल्ला जाने का कारण क्या था?
- (5) प्रीति की दृष्टि से कामयाबी का अर्थ क्या है?

(ई) निम्नलिखित दो वाक्यों में से कोई एक वाक्य किसने, किस संदर्भ में कहा है? पठित गद्यपाठ के आधार पर लिखिए : 3

- (1) "वाह ! वाह ! बड़ा आनंद है।"
- (2) "सिक्योरिटी तो हम देखेंगे।"

(उ) निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर पठित गद्यपाठों के आधार पर संक्षेप में (साठ-सत्तर शब्दों तक) लिखिए : 9

- (1) चपरासी खीजकर ग्वाले को क्या सुझाव देता है?
- (2) गोवर्धनदास पर पछताने की बारी क्यों आ गई?
- (3) सबने राहत की साँस कब और क्यों ली?
- (4) 'सच्ची संपन्नता' किसे कह सकते हैं?
- (5) प्रीति माँगा ने बच्चों को क्या संदेश दिया है?

(ऊ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर एक एक वाक्य में लिखिए : 3

"इक्कीस दिन के पाठ के इक्कीस रुपए और इक्कीस दिन तक दोनों बखत पाँच-पाँच ब्राह्मणों को भोजन करवाना पड़ेगा। कुछ रुककर पंडित जी ने कहा,

सो इसकी चिंता न करो, मैं अकेले दोनों समय भोजन कर लूँगा और मेरे अकेले भोजन करने से पाँच ब्राह्मणों के भोजन का फल मिल जाएगा।"

"यह तो पंडित जी ठीक कहते हैं। पंडित जी की तोंद तो देखो ! " मिसरानी ने मुस्कराते हुए पंडित जी पर व्यंग्य किया।

- (1) पंडित जी के कथन से उनकी कौन-सी वृत्ति सूचित होती है?
- (2) पंडित जी लोगों की किस भावना का लाभ उठाते नजर आ रहे हैं?
- (3) मिसरानी ने पंडित जी पर किस प्रकार व्यंग्य कसा?

2.(अ) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पठित पद्यपाठों में प्रयुक्त शब्दों से कीजिए। शब्दों को अधोरेखांकित कीजिए :

3

(माखन, धन, जीवन, पंखों)

- (1) दान दिए _____ न घटे, नदी न घटे नीर।
- (2) तेरो लाल मेरो _____ खायो।
- (3) और नहीं _____ में भी गति।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पठित पद्यपाठों के आधार पर केवल एक-एक वाक्य में लिखिए :

3

- (1) धन से ज्यादा क्या बड़ा है?
- (2) निर्झर झरकर क्या संदेश देते हैं?
- (3) कवि ने मन को क्या न सहने के लिए कहा है?

(इ) निम्नलिखित पठित पद्यांश के आधार पर गए प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

3

दूर तक जमीन पर शानदार जय लिखो,

दूर तक जमीन पर शानदार जय लिखो

तुम विशाल सिंधु पर खून से विजय लिखो।

तोड़ दो पिशाच के तुम हरेक जाल को,

(1) शूरवीर बालकों को जमीन पर क्या करना है?

(2) पिशाच से क्या तात्पर्य है?

(3) किस पर खून से विजय लिखना है?

(ई) निम्नलिखित पठित पद्य-खंड का सरल गद्यार्थलिखिए :

3

मुक्त व्यक्ति, संगठित समाज हो,

गुण ही जन-मन किरीट, ताज हो

नवयुग का अब नया विधान हो !

(उ) निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर पठित पद्यपाठों के आधार पर संक्षेप में लिखिए:

6

(1) कवि 'नीरज' ने खग की हिम्मत कैसे बँधाई है?

(2) कवि ने झरने के साथ जीवन की तुलना किस प्रकार की है?

(3) कवि ने देश के बालकों को कौन-सी जिम्मेदारियाँ सौंपी हैं ?

(4) समस्याओं का समाधान न मिलने के कारण जनता के आक्रोश को नेता लोग क्या कहकर टाल देते हैं?

3. निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर पठित पूरक पाठों के आधार पर संक्षेप में लिखिए :

8

(1) पुस्तक-विक्रेता की बीमारी क्या थी? स्पष्ट कीजिए।

- (2) अतिथिशाला के माली का वर्णन कीजिए।
- (3) थिंफू नरेश कहाँ रहते हैं और क्यों?
- (4) टेसी थॉमस का मिसाइल जगत में प्रवेश कैसे हुआ?

अथवा

निम्नलिखित पठित दो पूरक पाठों में से किसी एक का सार लिखिए :

- (1) तुलसी का बिरवा
- (2) साहसी बालक

प्रश्न 4. (ट) निम्नलिखित दो शब्दों में से किसी एक शब्द का अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए :

1

- (1) की ओर
- (2) क्योंकि

(ठ) निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य में अधोरेखांकित शब्द का शब्दभेद लिखिए :

1

- (1) उफ़! व्यक्ति समाज की दुर्दशा हो रही है।
- (2) यदि कोशिश करोगे तो तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

(ड) कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य का काल-परिवर्तन कीजिए :

1

- (1) वह हिमालय को खोज रहा है। (पूर्ण वर्तमानकाल)
- (2) उसने रोते हुए कहा। (सामान्य भविष्यकाल)

(ढ) निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य में प्रयुक्त सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए :

1

- (1) नौकरों पर उसका हुक्म चलने लगा।
- (2) उन लोगों ने नदी का किनारा छोड़ दिया।

अथवा

निम्नलिखित दो क्रियाओं में से किसी एक क्रिया का सहायक क्रिया के रूप में अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए :

- (1) रहना
- (2) सकना

(ण) निम्नलिखित दो क्रियाओं में से किसी एक क्रिया के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :

1

- (1) चलना
- (2) पढ़ना

अथवा

निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य में प्रयुक्त प्रेरणार्थक क्रिया रूप छाँटकर उसका प्रकार लिखिए :

- (1) रामू ने दूध का भाव बढ़ावाया।
- (2) उस मंदिर में हमने पाँच रुपयों का प्रसाद चढ़ाया।

(त) निम्नलिखित तीन वाक्यों में से कोई दो वाक्य शुद्ध करके लिखिए :

2

- (1) राजकुमार ने हिरन का शिकार की।
- (2) लेखन ने अभिनेत्री की घमंड तोड़ी।
- (3) भाषा ईश्वर का बड़ा देन है।

अथवा

निम्नलिखित तीन वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों में योग्य विराम-चिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :

- (1) जो काम जिस वक्त करना है न करना वक्त के साथ दगाबाजी है
- (2) क्या यह केवल भ्रम था
- (3) मैं गीता और सुखमनी साहब का पाठ भी करती हूँ

(थ) निम्नलिखित पाँच मुहावरों में से किन्हीं तीन मुहावरों के हिंदी अर्थ देकर उनका अर्थपूर्ण स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

3

- (1) तोलकर बोलना
- (2) ढाक के तीन पात
- (3) मुँह फेरना
- (4) ठुकरा देना
- (5) मोल लेना

अथवा

निम्नलिखित वाक्यों में से अधोरेखांकित तीन वाक्यांशों के बदले कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से योग्य मुहावरे का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :

(मन न लगना, शिकार होना, राहत की साँस लेना, सिर पर उठाना)

- 1) सालभर की आय पर ईमानदारी से आयकर भरकर रमेश निश्चिंत हो गया।
- 2) विद्यार्थी ने किताब खोली, पर पढ़ने में उसकी इच्छा नहीं हो रही थी।
- 3) आज़ादी के पहले गाँवों में अनेक लोग प्लेग से पीड़ित हो गए।

5. निम्नलिखित चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 150 से 200 शब्दों तक निबंध लिखिए :

10

- (1) 'वृक्ष लगाओ देश बचाओ'
- (2) 'जीवन में गुरु का महत्त्व'
- (4) 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत'
- (5) 'एक अंधे की आत्मकथा'

प्रश्न 6 (य) निम्नलिखित कार्यालयीन तथा व्यावसायिक दो पत्रों में से किसी एक पत्र का लिफाफे सहित नमूना तैयार कीजिए :

4

- (1) मा.स्वास्थ्य अधिकारी, नगर परिषद, कोल्हापुर को संजय / संगीता कोटणीस 45, शिवनेरी, शाहूनगर, खासबाग मैदान, कोल्हापुर से पत्र

लिखकर अपने मुहल्ले में बढ़ती गंदगी के बारे में शिकायत करते हुए आवश्यक प्रबंध का अनुरोध करता / करती है।

- (2) अरुण/अरुणा पाटील, माधवबाग, सांगली से मा.व्यस्थापक क्वालिटी स्पोर्ट्स, अप्पा बलवंत चौक को क्रिकेट खेल की सामग्री मँगाते हुए पत्र लिखता/ लिखती है।

अथवा

निम्नलिखित विज्ञापन का नमूना तैयार कीजिए :

आपको अपना घर किराए पर देना है - विज्ञापन का प्रारूप तैयार कीजिए।

- (र) निम्नलिखित रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखिए। उसे उचित शीर्षक देकर

यह भी दर्शाइए कि उससे क्या सीख मिलती है :

4

एक कौआ और हंस ____ दोनों में मित्रता ____ दोनों का आकाश में उड़ना ____ सड़क से एक ग्वाले का दधि पात्र लेकर गुजरते हुए देखना ____ कौए का पात्र पर चुपचाप बैठकर दही खाने का आग्रह ____ हंस का इनकार ____ कौए का घसीटकर ले आना ____ कौए का चोंच नचाकर दही का स्वाद लेना ____ हंस का बैठे रहना ____ कौए का आहट पाकर उड़ जाना ____ हंस का पकड़ा जाना ____ परिणाम।

- (ल) निम्नलिखित अपठित गद्य-खंड पर आकलन हेतु चार ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए,

जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :

4

वार्तालाप की शिष्टता मनुष्य को आदर का भाजन बनाती है और समाज में उसकी सफलता के लिए रास्ता साफ कर देती है। मनुष्य का समाज पर जो प्रभाव पड़ता है, वह कुछ अंश में उसकी उसकी पोशाक और चाल-ढाल पर निर्भर रहता है, किंतु विष भरे कनकघटों की संसार में कमी नहीं है। यह प्रभाव ऊपरी होता है और पोशाक का मान जब तक भाव से पुष्ट नहीं होता है, तब तक स्थायी नहीं होता। मधुरभाषी के लिए करनी और कथनी का

साम्य आवश्यक है, किंतु कर्म के लिए वचन पहली सीढ़ी है। मधुर वचन ही उत्पन्न कर भय और आतंक का परिमार्जन कर देते हैं। कटुभाषी लोगों से लोग हृदय खोलकर बात करने से डरते हैं। सामाजिक व्यवहार के लिए विचारों का आदान-प्रदान आवश्यक है। और वह भाषा की शिष्टता और स्पष्टता के बिना प्राप्त नहीं होता। भाषा की सार्थकता इसी में है कि वह दूसरों पर यथेष्ट प्रभाव डाल सके। जब बुरे वचन आदमी को रुष्ट कर सकते हैं तो मधुर वचन दूसरे को प्रसन्न भी कर सकते हैं। शब्दों का जादू बड़ा जबर्दस्त होता है।

M.S.B

कक्षा : 10

हिन्दी - 2016

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

सूचना : शुद्ध भाषा एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है।

1. (अ) निम्नलिखित विधानों के साथ दिए गए विकल्पों में से पठित गद्यपाठों के आधार पर सही विकल्प जोड़कर प्रत्येक विधान पूर्ण वाक्य में लिखिए :2

(1) पतंजलि ने चित्तशुद्धि के लिए

(अ) महाभाष्य लिखा।

(ब) वैद्यक लिखा।

(क) योगसूत्र लिखा।

(2) लेखक को अक्सर

(अ) म. गांधीजी का जला हाथ याद आता है।

(ब) स्वयंसेवक दल याद आता है।

(क) बिना हैंडल की गरम पानी की बाल्टी याद आती है

- (आ) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पठित गद्यपाठों में प्रयुक्त शब्दों से कीजिए। प्रयुक्त शब्द अधोरेखांकित कीजिए : 3

(1) पलाश लेग्यूमिनोसी परिवार का वृक्ष है।

(2) उस समय वह आत्महत्या करने के मूड में था।

(3) किसी जमाने में एक अत्यंत रूपवती पहाड़ी कन्या थी।

(इ) निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर पठित गद्यपाठों के आधार पर केवल एक-एक वाक्य में लिखिए : 3

(1) लेखक के अनुसार किसके बगैर मनुष्य नहीं है?

उत्तर: लेखक के अनुसार वाणी और चिंतन के बगैर मनुष्य मनुष्य नहीं है।

(2) कसाई ने भेड़ किससे मोल ली थी?

उत्तर : कसाई ने गड़रिये से भेड़ मोल ली थी।

(3) मुख्यमंत्री जी के पाँच मिनट किसकी प्रशंसा में निकल गए?

उत्तर : मुख्यमंत्री जी के पाँच मिनट स्थानीय नेताओं की प्रशंसा में निकल गए।

(4) विनायक बाबू के झल्ला जाने का कारण क्या था?

उत्तर : विनायक बाबू के झल्ला जाने का कारण यह था कि साइकिल स्टैंड पर वे अपनी साइकिल लेने पहुँचे, तो वहाँ ताला लगा हुआ था।

(5) प्रीति की दृष्टि से कामयाबी का अर्थ क्या है?

उत्तर : प्रीति मोंगा की दृष्टि से कामयाबी का अर्थ सबसे ज्यादा चुनौतियों का सामना करना है।

(ई) निम्नलिखित दो वाक्यों में से कोई एक वाक्य किसने, किस संदर्भ में कहा है?

पठित गद्यपाठ के आधार पर लिखिए : 3

(1) "वाह ! वाह ! बड़ा आनंद है।"

उत्तर : उपर्युक्त वाक्य गोवर्धनदास ने कुंजड़िन और हलवाई से भाजी और मिठाई का भाव टके सेर सुनने के संदर्भ में कहा।

(2) “सिक्योरिटी तो हम देखेंगे।”

उत्तर : उपर्युक्त वाक्य कलेक्टर के पी.ए. ने होटल के मैनेजर के सिक्योरिटी के संदर्भ में प्रश्न पूछने पर कहा।

(3) निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर पठित गद्यपाठों के आधार पर संक्षेप में (साठ-सत्तर शब्दों तक) लिखिए : 9

(1) चपरासी खीजकर ग्वाले को क्या सुझाव देता है?

उत्तर : यहाँ पर फूड इंस्पेक्टर और चपरासी के भ्रष्टाचार में लिप्त होने की बात को उजागर किया गया है।
चपरासी ग्वाले को बताता है कि भ्रष्टाचार के घूसरेट फिक्स हैं। यदि वह बीस सेर में दस सेर दूध लाता है तो पाँच रूपए हफ्ता देना पड़ेगा। ज्यादा जल डालेगा तो हफ्ते के रेट भी बढ़ जाएँगे। इस पर ग्वाला कहता है कि यदि वह दूध में पानी मिलाएँ ही नहीं तो। इस पर चपरासी खीझ उठता है। कहता कि पानी तो उसे मिलाना ही पड़ेगा वरना उन सब लोगों का गुजारा कैसे होगा? वैसे भी उसके साहब को भी दूध में पानी मिलाने में एतराज नहीं है। उन्हें एतराज है, हफ्ता न देने का। इसलिए वह दूसरे दूधवालों को भी समझा दे कि मिल-जुलकर जो होता है, वह भ्रष्टाचार नहीं होता।
इस प्रकार चपरासी ग्वाले की बातों से खीझकर उसे दूध में पानी मिलाने और भ्रष्टाचार का अनुचित सुझाव देता है।

(2) गोवर्धनदास पर पछताने की बारी क्यों आ गई?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न में गोवर्धनदास ने गुरु की बात न मानने के कारण हुए पछतावे का वर्णन किया गया है।
गोवर्धनदास के गुरु ने उसे समझाया था कि ऐसे नगर में रहना उचित नहीं जहाँ के लोग सत्य-असत्य, भला-बुरा, महँगा-

सस्ते का ज्ञान न रखते हो। लेकिन गोवर्धनदास इन बातों को न समझ सका। पर जब राजा के सिपाहियों से उसे घेर लिया और केवल मोटा होने के कारण उसे फाँसी पर चढ़ाने के लिए ले जाने लगे तो उसे गुरु की बात न मानने का पछतावा हुआ। इस तरह जब बिना किसी अपराध के उस पर फाँसी चढ़ने की बारी आई तो उसे पछतावा हुआ।

(3) सबने राहत की साँस कब और क्यों ली?

उत्तर : होटल गोल्डन गेट में लघु-उद्योग पर राज्य स्तर की एक मीटिंग मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में होने वाली थी पहले इस मीटिंग में मुख्यमंत्री नहीं आने वाले थे। पर बाद में अचानक उनके आने का प्लान बन गया इसलिए होटल वालों को लंच के मेनू में कुछ आखिरी परिवर्तन करने पड़े थे। कलेक्टर के पी.ए. ने होटल के मैनेजर को मुख्यमंत्री के किए मक्के की रोटी और सरसों का साग बनाने की हिदायत दी। होटल वाले इस व्यंजन को बनाने में असमर्थ थे और साथ ही यदि वे इस व्यंजन को किसी अन्य होटल से मँगवाते तो इसमें उनके होटल के दुष्प्रचार होने की संभावना बढ़ती थी। ऐसे जटिल समय में मुख्य रसोइए ने होटल मैनेजर को आश्वस्त किया कि उसने होटल की बर्तन माँजने वाली से बात कर ली है जो यह दोनों चीजें बनाना जानती है। इस प्रकार मंगला द्वारा खाने का जिम्मा उठा लेने के बाद सबने राहत की साँस ली।

(4) 'सच्ची संपन्नता' किसे कह सकते हैं?

उत्तर: प्रस्तुत प्रश्न 'सच्ची संपन्नता' नामक पाठ से लिया गया है

जिसके लेखक 'राजेंद्र श्रीवास्तव जी' हैं। इस प्रश्न के माध्यम से सांसारिक वैभव की संपन्नता तथा गरीबों दोनों का मंथन करके सच्ची संपन्नता को परिभाषित किया गया है।

लोग प्रायः धन की विपुलता से प्राप्त ऐश-आराम को ही संपन्नता समझते हैं। विनायक बाबू को साहब के बंगले में इसी संपन्नता के दर्शन होते हैं। सांसारिक दृष्टि से बड़े साहब संपन्न व्यक्ति हैं, क्योंकि उनके पास बंगला, गाड़ी आदि सुख-सुविधाएँ हैं। किन्तु यह सब होने से कोई संपन्न नहीं होता। यह समाज के लिए अनिष्टकारी है। सच्ची संपन्नता जीवन मूल्यों, आदर्शों व संस्कारों में निहित है।

प्रस्तुत कहानी के बड़े साहब, उनकी बीवी और बच्चे चमक-दमक की जिस रंगीन दुनिया में रहते हैं, वहाँ सब-कुछ है परंतु अपनों में इज्जत नहीं है, आत्मीयता व प्यार नहीं है। सच्चे सुख के लिए तरसते तथाकथित संपन्न लोग सचमुच बहुत गरीब हैं। दूसरी तरफ विनायक बाबू का परिवार है। उनके पास बंगला, गाड़ी आदि सुख-सुविधाएँ नहीं हैं। बस एक छोटे से कमरे में उनका परिवार किसी तरह अपना जीवन गुजार रहा है। किन्तु विनायक बाबू खुश हैं कि उनके पास साथ देनेवाली पत्नी, अभावों में भी जिंदगी के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखनेवाली पुत्रियाँ तो हैं। यह संपन्नता उन्हें असीम सुख और संतोष देती है।

(5) प्रीति माँगा ने बच्चों को क्या संदेश दिया है?

उत्तर : प्रीति माँगा ने बच्चों को यह संदेश दिया है कि हर काम को सच्चाई, ईमानदारी और खुशी से करो। खुशियों का हाथ पकड़ो तो वे और मिलेंगी। जहाँ भी जाओ, वहाँ से कुछ लेकर आओ, सीखकर आओ। सीखने के दरवाजे हमेशा खुले रखो। साथ ही उनका यह भी कहना था कि विकलांगों को स्वयं आगे बढ़ाने दो। उनके पास असीम शक्तियाँ हैं। काम अपने आप में एक शक्ति है, जो सफलता को बाँधकर ले आती है।
इस प्रकार प्रीति माँगा के संदेश का पालनकर हर बच्चा सफलता की सीढ़ी चढ़ सकता है।

(ऊ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर एक एक वाक्य में

लिखिए :

3

"इक्कीस दिन के पाठ के इक्कीस रुपए और इक्कीस दिन तक दोनों बखत पाँच-पाँच ब्राह्मणों को भोजन करवाना पड़ेगा। कुछ रुककर पंडित जी ने कहा, सो इसकी चिंता न करो, मैं अकेले दोनों समय भोजन कर लूँगा और मेरे अकेले भोजन करने से पाँच ब्राह्मणों के भोजन का फल मिल जाएगा।"

"यह तो पंडित जी ठीक कहते हैं। पंडित जी की तोंद तो देखो! " मिसरानी ने मुस्कराते हुए पंडित जी पर व्यंग्य किया।

(1) पंडित जी के कथन से उनकी कौन-सी वृत्ति सूचित होती है?

उत्तर : पंडित जी के कथन से उनकी लोभवृत्ति सूचित होती है।

(2) पंडित जी लोगों की किस भावना का लाभ उठाते नजर आ रहे हैं?

उत्तर : पंडित जी लोगों की धार्मिक अंधविश्वास की भावना का लाभ उठाते नजर आ रहे हैं।

(3) मिसरानी ने पंडित जी पर किस प्रकार व्यंग्य कसा?

उत्तर : मिसरानी ने पंडित जी की तोंद देखने की बात कहते हुए उन पर व्यंग्य कसा।

2.(अ) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पठित पद्यपाठों में प्रयुक्त शब्दों से कीजिए। शब्दों को अधोरेखांकित कीजिए : 3

(माखन, धन, जीवन, पंखों)

(1) दान दिए धन न घटे, नदी न घटे नीर।

(2) तेरो लाल मेरो माखन खायो।

(3) और नहीं पंखों में भी गति।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पठित पद्यपाठों के आधार पर केवल एक-एक वाक्य में लिखिए : 3

(1) धन से ज्यादा क्या बड़ा है?

उत्तर : धन से बड़ी इज्जत है।

(2) निर्झर झरकर क्या संदेश देते हैं?

उत्तर : निर्झर झरकर यह संदेश देता है कि चलना ही जीवन है और रुक जाना मृत्यु है।

(3) कवि ने मन को क्या न सहने के लिए कहा है?

उत्तर : कवि ने मन को पीड़न और अन्याय न सहने के लिए कहा है।

(इ) निम्नलिखित पठित पद्यांश के आधार पर गए प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए : 3

दूर तक जमीन पर शानदार जय लिखो,
दूर तक जमीन पर शानदार जय लिखो
तुम विशाल सिंधु पर खून से विजय लिखो।
तोड़ दो पिशाच के तुम हरेक जाल को,

उत्तर : शूरवीर बालकों को जमीन पर जय लिखना है।

(2) पिशाच से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : लेखक ने देश के दुश्मनों को पिशाच (राक्षस) कहा है।

(3) किस पर खून से विजय लिखना है?

उत्तर : दूर तक फैले हुए समुद्र पर खून से विजय लिखना है।

(ई) निम्नलिखित पठित पद्य-खंड का सरल गद्यार्थलिखिए :

3

मुक्त व्यक्ति, संगठित समाज हो,
गुण ही जन-मन किरीट, ताज हो
नवयुग का अब नया विधान हो !

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश 'जनगीत' कविता से लिया गया है। इस गीत के रचयिता श्री सुमित्रानंदन पंत हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने समाज के शोषण एवं उत्पीड़न को समाप्त कर आजाद व्यक्ति तथा संगठित रहने का संदेश दिया है।

कवि कहते हैं कि नए युग में समाज के प्रत्येक व्यक्ति को विकास करने करने की पूरी स्वतंत्रता होगी। समाज के लोगों में एकता की भावना रहेगी और वे संगठित रहेंगे। प्रत्येक व्यक्ति के गुणों का उचित सम्मान होगा। नए युग में सभी लोगों को न्याय मिलेगा। नए युग के नए नियम एवं कानून होंगे।

(3) निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर पठित पद्यपाठों के आधार पर संक्षेप में लिखिए: 6

(1) कवि 'नीरज' ने खग की हिम्मत कैसे बँधाई है?

उत्तर : यहाँ पर कवि नीरज खग को हिम्मत बँधाते कहते हैं कि जीवन में सदैव आशावादी दृष्टिकोण रखना चाहिए। जीवन में आगे बढ़ते हुए अनेक कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ सकता है। राह में अनेक दुश्मन आएँगे जो मार्ग में रास्ता रोकने का प्रयास करेंगे। ऐसे समय में हे खग तुम निरंतर उड़ते रहना। मार्ग में आने वाले शत्रु अपने-आप ही समाप्त हो जाएँगे और आगे बढ़ने का मार्ग सरल हो जाएगा।

इस प्रकार कवि ने खग की हिम्मत बँधाते हुए किसी भी परिस्थिति में हार न मानते हुए सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है।

(2) कवि ने झरने के साथ जीवन की तुलना किस प्रकार की है?

उत्तर : 'जीवन का झरना कविता कवि आरसी प्रसाद सिंह की प्रेरणादायी कविता है जिसमें उन्होंने जीवन की तुलना झरने से करते हुए निरंतर गतिशील रहने की प्रेरणा दी है।

निर्झर का अर्थ है झरना। जिस प्रकार झरना बिना रुके अबाध गति से बढ़ता जाता है। झरने की राह में पहाड़, जंगल, रोड़ों जैसी अनेकों कठिनाईयाँ आती हैं परंतु फिर भी वे झरने की आबाध गति को रोक नहीं पाते क्योंकि झरने में गति, स्फूर्ति और जीवन में आगे बढ़ने की लगन होती है।

उसी प्रकार जीवन भी बिना रुके लक्ष्य की ओर बढ़ते ही रहने का नाम है। मनुष्य के जीवन में भी अनेकों बाधाएँ आती और जाती रहती है उसके बावजूद जो हर परिस्थिति का सामना करता है वह अंत में अपनी मंजिल पा ही जाता है।

अतः गतिशील रहने में ही मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

इस प्रकार कवि ने जीवन और झरना की आपस में गतिशीलता के माध्यम से तुलना की है।

(3) कवि ने देश के बालकों को कौन-सी जिम्मेदारियाँ सौंपी हैं?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न कवि 'रामवतार त्यागी जी' द्वारा लिखित 'थाम लो सँभालकर' नामक कविता से लिया गया। इस कविता में कवि ने देश के नवयुवकों को देश की बागडोर सँभालकर उसे आगे प्रगति के पथ पर ले जाने का संदेश दिया है।

कवि नई पीढ़ी के बालकों में देश के उज्ज्वल भविष्य की अनंत संभावनाएँ देखता है। कवि चाहता है कि यह पीढ़ी कुछ ऐसे अनुकरणीय कार्य करें जो आने वाली पीढ़ी के लिए मिसाल बन सकें। कवि यह भी चाहता है कि आज के बालक समाज में व्याप्त गरीबी, शोषण असमानता आदि के अंधकार को दूर कर समानता, न्याय, सच्चाई आदि के प्रकाश को जन-जन तक पहुँचाएँ। अपनी लगन और मेहनत से सदैव उत्तम कार्य करें।

इसप्रकार कवि ने देश के बालकों को देश को नई दिशा देने, अनुकरणीय कार्य करने और देश की रक्षा की जिम्मेदारियाँ सौंपी हैं।

(4) समस्याओं का समाधान न मिलने के कारण जनता के आक्रोश को नेता लोग क्या कहकर टाल देते हैं?

उत्तर : इस कविता में जनता की समस्याओं के प्रति नेता लोगों की अवहेलना दर्शाई गई है। वर्तमान व्यवस्था में किसी तरह का भी बदलाव न होने देने की राजनैतिक मानसिकता उजागर की है। अधिकारों की बात करने वाले साधारण लोगों की कोई सुनवाई नहीं होती। इससे उनमें झल्लाहट पैदा होती है। वह अपने अधिकारों को पाने के लिए आवाज को बुलंद करता है। तब नेता लोग उनके

आक्रोश को क्षणिक उत्तेजना कहकर बड़ी खूबी से टाल देते हैं। उनकी बातों को महत्त्व नहीं देते। उनकी समस्याओं का कोई समाधान नहीं करता।

इस प्रकार समस्याओं का समाधान न मिलने के कारण जनता के आक्रोश को नेता लोग क्षणिक उत्तेजना कहकर टाल देते हैं।

3. निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर पठित पूरक पाठों के आधार पर संक्षेप में लिखिए :

8

(1) पुस्तक-विक्रेता की बीमारी क्या थी? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत अपनी-अपनी बीमारी में लेखक ने लोगों के अलग-अलग बीमारी की चर्चा की है, उसमें से एक पुस्तक-विक्रेता भी हैं। उसे दुख है कि पिछले साल 50 हजार की किताबें पुस्तकालयों को बेची थीं। इस साल 40 हजार की बिकीं। कहते हैं - बड़ी मुश्किल है। सिर्फ 40 हजार की किताबें इस साल बिकीं। परंतु लेखक को उनके दुःख से दुःख नहीं हुआ क्योंकि उन्होंने इनके पास अपनी 100 किताबें रख दी थीं। वे बिक गईं। मगर जब वे पैसे माँगते हैं, तो वे ऐसे हँसने लगते हैं जैसे वे हास्यरस पैदा कर रहे हों। लेखक उसके दुख से दुखी नहीं हो पाते। उनके मन में बिजली के बिल के 40 रु. की चिंता थी।

(2) अतिथिशाला के माली का वर्णन कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न 'गंगाबाबू हैं कौन' नामक पाठ के से लिया गया है।

यह पाठ लेखिका शिवानी द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध संस्मरण कथा है। इसमें लेखिका ने अतिथिशाला के माली का वर्णन किया है।

अतिथिशाला का माली एक लंबे कद का व्यक्ति था। उसका चेहरा स्याह था। उसकी मुस्कराहट में भी एक प्रकार की रहस्यमयता का अहसास होता था। खड़े होते हुए भी उसकी देह तिरछी हो जाती थी। उसने लेखिका को हिदायत दी कि वे अपना दरवाजा और खिड़की बंद रखें ताकि भयानक करैत साँप अंदर न आ सके। अपनी दिव्य वाणी की मिठास घोलकर और लंबे-लंबे ढग भरता वह जब चला गया तो लेखिका को ऐसा लगा मानो वह माली सीधे परलोक से चला आ रहा कोई यमालय का माली हो।

इस प्रकार अतिथिशाला का माली अपने आप में एक विचित्र व्यक्ति था।

(3) थिंफू नरेश कहाँ रहते हैं और क्यों?

उत्तर : थिंफू नरेश दूर जंगल में बनी हुई पर्णकुटी में रहते हैं। वे एक सादगी पसंद व्यक्ति हैं। उन्हें राजमहल के वैभव से दूर रहना पसंद है। इसलिए वे राजमहल में न रहकर वन की पर्णकुटी में रहते हैं और उनके राजमहल में राजमाता रहती हैं।

(4) टेसी थॉमस का मिसाइल जगत में प्रवेश कैसे हुआ?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न टेसी थॉमस नामक पाठ से लिया गया है इस पाठ के माध्यम से लेखक ने टेसी थॉमस की उपलब्धि का वर्णन किया है। टेसी थॉमस को जब रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ.)में काम करने का मौका मिला तब उन्होंने ने मिसाइल की दुनिया को बारीकी से जाना। उन्होंने अपना कुछ समय डी.आर.डी.ओ. के पुणे संस्था गाइडेड मिसाइलों की फैकल्टी के रूप में भी कार्य किया, जहाँ उन्हें अपने निदेशक के रूप में अप्रतिम वैज्ञानिक, पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का नेतृत्व

मिला। इसके बाद उनके कदम बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रमों की तरफ तेजी से बढ़ने लगे और शीघ्र ही वे वीइकल और मिशन डायरेक्टर के रूप में अग्नि iv की मुखिया बनीं। टेसी थॉमस को मिसाइल से इतना प्रेम है कि उन्होंने अपने बेटे का नाम तक भारत के हल्के कॉम्बैट जेट के नाम पर 'तेजस' रखा है। उन्होंने अपने आप को अग्नि मिसाइल के नवीनतम संस्कारणों से जोड़ रखा है। अब अग्नि v की सफलता के बाद उन्होंने अपना ध्यान मल्टीपल इंडिपेंडेंट री-एंट्री वीइकल पर केंद्रित कर दिया है। अतः इस तरह सुश्री टेसी थॉमस मिसाइल जगत में प्रवेश हुआ।

अथवा

निम्नलिखित पठित दो पूरक पाठों में से किसी एक का सार लिखिए :

(1) तुलसी का बिरवा

उत्तर : 'तुलसी का बिरवा' पाठ में तुलसी के औषधीय एवं धार्मिक महत्त्व और सामाजिक उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया है।

तुलसी का पौधा मनुष्य के जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह वातावरण की वायु को शुद्ध रखता है। मच्छर तथा कीटाणुओं और पतंगों को दूर भगाता है। इसकी सुगंध अनेक रोगों के कीटाणुओं को भी नष्ट कर देती है। इटली और ग्रीस के लोगों को बहुत पहले ही तुलसी के पौधे में निहित औषधीय गुणों का पता चल गया था। वे इसका उपयोग चूहे व कीड़े भगाने के लिए किया करते थे। उनके यहाँ तुलसी कीड़े भगाने के लिए आज भी उपयोग में लाई जाती है। खाँसी, जुकाम, गले की बीमारियों तथा मलेरिया आदि में उबले पानी या चाय के साथ इसका सेवन लाभकारी होता है। वैज्ञानिक अनुसंधानों से

यह बात साबित हो चुकी है कि इसके बीजों से निकलने वाला तेल टी.बी. के रोग का नाश कर डालता है।

भारत में तुलसी की पत्ती के साथ-साथ मंजरी को भी औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। छोटे बच्चों या शिशुओं को हिचकी लगते समय इसकी पत्ती की एक बिंदी बच्चे के माथे पर लगा देते हैं। गंदे स्थानों या कीटाणुओं वाली जगहों से लौटने के बाद लोग तुलसी की पत्ती मुँह में रखकर चबा लेते हैं। तुलसी की सुगंध सच-मुच रोगाणुनाशी व संक्रमणहारी होती है।

भारतीयों के लिए तुलसी का विशेष धर्मिक महत्त्व है। अधिकतर हिंदू घरों में तुलसी का पौधा पाया जाता है। स्त्रियाँ तुलसी के पौधे की पूजा करती हैं। देवता को नैवेद्य में चढ़ाया जाता है। चरणामृत में भी तुलसी की पत्तियाँ डाली जाती हैं। जिनके लड़कियाँ नहीं होतीं, ऐसे कुछ लोग तुलसी के विवाह का आयोजन कर कन्यादान का पुण्य प्राप्त कर लेते हैं। इसाई धर्म में भी तुलसी को बहुत पवित्र माना गया है। अंग्रेजी में इसे 'बेसिल' या 'सेक्रेड बेसिल' यानी पवित्र तुलसी कहते हैं। ऐसा माना जाता है की ईसामसीह यानी क्राइस्ट की कब्र पर सिर्फ तुलसी का पौधा उगा था। संत बेसिल दिवस को स्त्रियाँ तुलसी की टहनियों को गिरिजाघर में ले जाती हैं और घर लौटने पर उन टहनियों को फर्श पर बिखेर देती हैं, जिससे आनेवाला वर्ष शुभकारी हो।

सामाजिक रूप से पूजा पाठ में तथा नैवेद्य में तुलसी का इस्तेमाल होता है। जनेऊ, चूड़ी वगैरह टूटने पर पवित्र जगह यानि तुलसी के पास रख दी जाती हैं। मरते समय भी आदमी

के मुख में तुलसी रखना अनिवार्य है। लोगों का मानना है कि तुलसी न रखने पर प्राण पखेरू शांति से नहीं निकलते।

(2) साहसी बालक

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न 'साहसी बालक' नामक पाठ से लिया गया है।

यहाँ पर तेरह वर्षीय बालक धनंजय और चारु चिन्मय के साहसपूर्ण कारनामे का वर्णन किया गया है।

20 अगस्त 2002 को धनंजय अपनी माँ के साथ गाँव के समीप स्थित नदी में पूजा करने गया था। नहा धोकर वे दोनों पूजा करने लगे। अचानक धनंजय को अपने साथ ही नहाने आई अन्य पड़ोसी महिलाओं की चीख सुनाई पड़ी। धनंजय ने देखा कि नहाते-नहाते वे भारी भँवर में फँस गई थीं। वह तुरंत उन्हें बचाने के लिए नदी में कूद पड़ा। वह तैरता हुआ उन महिलाओं तक पहुँचा। भँवर काफी तेज था। काफी मशक्कत के बाद वह एक महिला का हाथ पकड़कर उन्हें किनारे की ओर खींचकर ले गया। उसके बाद वह फिर नदी के भँवर में कूदा। भँवर काफी तेज था और गहरता भी जा रहा था। इसी तरह वह एक-एक करके चार महिलाओं को भी किनारे तक लाने में सफल रहा। काफी मशक्कत व साहस के साथ धनंजय ने नदी में डूबती सभी महिलाओं को बचाया।

इस प्रकार धनंजय ने अपने साहस का परिचय देकर चार महिलाओं को नया जीवनदान दिया।

एक दिन दोपहर के समय श्रीमती नेहा शर्मा अपने दोनों बच्चों चारु और चिन्मय के साथ ट्रेन से कहीं जा रही थीं। रास्ते में दो बदमाश गाड़ी में चढ़ गए। उनमें से एक ने वृद्ध महिला का

हैंडबैग छीन लिया और दूसरे ने चाकू लेकर श्रीमती शर्मा का हैंडबैग झपट लिया। यह देखकर चारु को गुस्सा आया और उसने उस बदमाश से अपनी माँ का हैंडबैग वापस छीन लिया। इस पर वह झपटमार चारु के बाल खींचकर उसे पीटने लगा, किंतु चारु ने बैग पर अपनी पकड़ ढीली न होने दी। जैसे ही उन बदमाशों ने चारु को दरवाजे की ओर धकेला, चिन्मय ने पीछे से उसके बाल खींचे और अपने पैने दाँतों से उसे काट दिया। इस सबका नतीजा यह हुआ कि बदमाश के हाथ से उसका चाकू छूट गया। चिन्मय ने फौरन उस चाकू को ट्रेन से नीचे फेंक दिया। इससे बौखलाकर दूसरे बदमाश ने चिन्मय को सीट के नीचे धकेला, जिससे उसके सिर में चोट भी लगी परंतु फिर भी दोनों भाई बहन बहादुरी से बदमाशों का मुकाबला करते रहे। इसी मुठभेड़ में दूसरें चोर के हाथ से वृद्ध महिला का बैग भी छूट गया, जिसे चिन्मय ने तुरंत कसकर पकड़ लिया। इस प्रकार हालात बेकाबू होते देखकर दोनों बदमाश घबरा गए और अगला स्टेशन आते ही भाग खड़े हुए।

इस प्रकार चिन्मय और चारु ने भागती ट्रेन में झपटमारों से बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया।

इन तीनों वीर बच्चों को उनके इस साहस के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रश्न 4. (ट) निम्नलिखित दो शब्दों में से किसी एक शब्द का अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए :

1

- (1) की ओर - मेरा घर पाठशाला की ओर है।
- (2) क्योंकि - रितेश समारोह में नहीं आ पाया क्योंकि वह अस्वस्थ था।

(ठ) निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य में अधोरेखांकित शब्द का शब्दभेद लिखिए :

1

(1) उफ! व्यक्ति समाज की दुर्दशा हो रही है।

विस्मयादिबोधक अव्यय

(2) यदि कोशिश करोगे तो तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

समुच्चयबोधक अव्यय

(ड) कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य का काल-परिवर्तन कीजिए :

1

(1) वह हिमालय को खोज रहा है। (पूर्ण वर्तमानकाल)

उसने हिमालय को खोजा है।

(2) उसने रोते हुए कहा। (सामान्य भविष्यकाल)

वह रोते हुए कहेगा।

(ढ) निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य में प्रयुक्त सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए :

1

(1) नौकरों पर उसका हुक्म चलने लगा।

लगा - लगना

(2) उन लोगों ने नदी का किनारा छोड़ दिया।

दिया - देना

अथवा

निम्नलिखित दो क्रियाओं में से किसी एक क्रिया का सहायक क्रिया के रूप में अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) रहना - सुमंत जाग रहा है।

(2) सकना - रीता विद्यालय न जा सकी।

(ण) निम्नलिखित दो क्रियाओं में से किसी एक क्रिया के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :

1

(1) चलना

चलाना चलवाना

(2) पढ़ना

पढ़ाना पढ़वाना

अथवा

निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य में प्रयुक्त प्रेरणार्थक क्रिया रूप छाँटकर उसका प्रकार लिखिए :

(1) रामू ने दूध का भाव बढ़ावाया।

भाव बढ़ावाया - द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया।

(2) उस मंदिर में हमने पाँच रुपयों का प्रसाद चढ़ाया।

प्रसाद चढ़ाया - प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया।

(त) निम्नलिखित तीन वाक्यों में से कोई दो वाक्य शुद्ध करके लिखिए :

2

(1) राजकुमार ने हिरन का शिकार की।

राजकुमार ने हिरन का शिकार किया।

(2) लेखन ने अभिनेत्री की घमंड तोड़ी।

लेखन ने अभिनेत्री का घमंड तोड़ा।

(3) भाषा ईश्वर का बड़ा देन है।

भाषा ईश्वर की बड़ी देन है।

अथवा

निम्नलिखित तीन वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों में योग्य विराम-चिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :

(1) जो काम जिस वक्त करना है न करना वक्त के साथ दगाबाजी है

“जो काम जिस वक्त करना है, न करना वक्त के साथ दगाबाजी है।”

क्या! यह केवल भ्रम था।

- (3) मैं गीता और सुखमनी साहब का पाठ भी करती हूँ
मैं गीता और सुखमनी साहब का पाठ भी करती हूँ।

(थ) निम्नलिखित पाँच मुहावरों में से किन्हीं तीन मुहावरों के हिंदी अर्थ देकर
उनका अर्थपूर्ण स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

3

- (1) तोलकर बोलना : संभलकर बोलना।

आजकल के युवाओं के सामने तोलकर बोलना चाहिए।

- (2) ढाक के तीन पात : सदा एक सा रहना

तुम सदैव ढाक के तीन पात ही रहोगे या बदलोगे भी।

- (3) मुँह फेरना : उपेक्षा करना।

राम के बुरे दिन आते ही सभी ने उससे मुँह फेर लिया।

- (4) ठुकरा देना : किसी काम या बात पर सहमति न देना

बेटे ने पिता की सही राय को ठुकरा दिया।

- (5) मोल लेना : खरीदना।

आजकल के लुभावने विज्ञापनों के चक्कर में आकर हम कुछ भी मोल ले
लेते हैं।

अथवा

निम्नलिखित वाक्यों में से अधोरेखांकित तीन वाक्यांशों के बदले कोष्ठक
में दिए गए मुहावरों में से योग्य मुहावरे का प्रयोग करके वाक्य फिर से
लिखिए :

(मन न लगना, शिकार होना, राहत की साँस लेना, सिर पर उठाना)

- 1) सालभर की आय पर ईमानदारी से आयकर भरकर रमेश निश्चिंत हो गया।

सालभर की आय पर ईमानदारी से आयकर भरकर रमेश ने राहत की साँस ली।

2) विद्यार्थी ने किताब खोली, पर पढ़ने में उसकी इच्छा नहीं हो रही थी।

विद्यार्थी ने किताब खोली, पर पढ़ने में उसका मन नहीं लग रहा था।

3) आज़ादी के पहले गाँवों में अनेक लोग प्लेग से पीड़ित हो गए।

आज़ादी के पहले गाँवों में अनेक लोग प्लेग के शिकार हो गए।

5. निम्नलिखित चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 150 से 200

शब्दों तक निबंध लिखिए :

10

(1) 'वृक्ष लगाओ देश बचाओ'

भारतीय संस्कृति की परंपरा के अनुसार पेड़ को देवता मानकर उनकी पूजा की जाती है। यह हमारे जीवन का आवश्यक अंग है। वृक्ष के बिना हम भी अधिक समय तक अपने अस्तित्व को जिंदा नहीं रख सकते। वन वातावरण में से कार्बन डाईऑक्साइड को कम करते हैं। वातावरण को शुद्ध बनाते हैं। बहुमूल्य ऑक्सीजन देते हैं। पेड़ हमें भोजन, घरों के निर्माण और फर्नीचर बनाने के लिए हमें लकड़ी प्रदान करते हैं। वे हमें ईंधन के लिए लकड़ी उपलब्ध कराते हैं। हमें विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियाँ देते हैं। बढ़ती आबादी, शहरीकरण के कारण हरियाली तेजी से कम हो रही है। जितनी तेज़ी से हम इनकी कटाई कर रहे हैं, उतनी तेज़ी से ही हम अपनी जड़ें भी काट रहे हैं। वृक्षों के कटाव के कारण आज भयंकर स्थिति उत्पन्न हो गई है। पेड़ों का क्रूर वध हमारे विनाश में सहायक होगा। रेगिस्तान का विस्तार होगा, नदियाँ सूख जाएगी, पानी की कमी होगी, भूमि बंजर हो जाएगी, प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाएगा। हमारा अस्तित्व उन पर निर्भर करता है इसलिए हमें पेड़ों की रक्षा करनी होगी। पर्यावरण की समस्याओं का एकमात्र समाधान पेड़ों की सुरक्षा है। सरकार ने जनमानस को जागृत करने के लिए 1950 में वन महोत्सव कार्यक्रम आरंभ किया।

पर्यावरण को बचाने के लिए यह हमारे जागने का वक्त है। सिर्फ जागने का ही नहीं, कुछ करने का भी। इसके लिए जरूरी है कि हम पेड़ लगाएँ।

विनोबा भावे ने हर व्यक्ति को एक पेड़ लगाना चाहिए यह संदेश दिया है। प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना होगा कि वन ही जीवन है , इस वन-जीवन से हम प्यार करें और वृक्षों को लगाकर इसकी रक्षा करें।

(2) 'जीवन में गुरु का महत्त्व'

गुरुब्रह्मा गुरुविष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।

गुरु की महिमा का पूरा वर्णन वास्तव में कोई नहीं कर सकता। क्योंकि गुरु की महिमा तो ईश्वर से भी कहीं अधिक है। गुरु को ईश्वर का दर्जा प्राप्त है।

गुरु के महत्त्व पर तुलसीदास ने भी रामचरितमानस में लिखा है -

गुरु बिनु भवनिधि तरङ्ग न कोई।

जों बिरंचि संकर सम होई॥

भले ही कोई ब्रह्मा, शंकर के समान क्यों न हो, वह गुरु के बिना भव सागर पार नहीं कर सकता। धरती के आरंभ से ही गुरु की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला गया है। वेदों, उपनिषदों, पुराणों, रामायण, गीता, गुरुग्रन्थ साहिब आदि सभी धर्मग्रन्थों एवं सभी महान संतों द्वारा गुरु की महिमा का गुणगान किया गया है। गुरु और भगवान में कोई अंतर नहीं है।

संस्कृत के शब्द गु का अर्थ है अन्धकार, रु का अर्थ है उस अंधकार को मिटाने वाला। आत्मबल को जगाने का काम गुरु ही करता है। गुरु अपने आत्मबल द्वारा शिष्य में ऐसी प्रेरणाएँ भरता है, जिससे कि वह अच्छे मार्ग पर चल सके। हमारे सभ्य सामाजिक जीवन का आधार स्तंभ गुरु हैं। कई ऐसे गुरु हुए हैं, जिन्होंने अपने शिष्य को इस तरह शिक्षित किया कि उनके शिष्यों ने राष्ट्र की धारा को ही बदल दिया। आध्यात्मिक शांति, धार्मिक ज्ञान और सांसारिक निर्वाह सभी के लिए गुरु का दिशा

निर्देश बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। गुरु केवल एक शिक्षक ही नहीं है, अपितु वह व्यक्ति को जीवन के हर संकट से बाहर निकलने का मार्ग बताने वाला मार्गदर्शक भी है। गुरु का दर्जा भगवान के बराबर माना जाता है क्योंकि गुरु, व्यक्ति और सर्वशक्तिमान के बीच एक कड़ी का काम करता है। जीवन में गुरु के महत्त्व का वर्णन कबीर दास जी ने अपने दोहों में पूरी आत्मीयता से किया है।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े का के लागु पाँव,
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।

आज के आधुनिक युग में भी गुरु की महत्ता में जरा भी कमी नहीं आयी है। एक बेहतर भविष्य के निर्माण हेतु आज भी गुरु का विशेष योगदान आवश्यक होता है।

(3) 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत'

किसी विद्वान ने क्या खूब कहा है - “मन के हारे हार मन के जीते जीत है” इस वाक्य का यदि आप गहराई से अवलोकन करें तो इस वाक्य की सार्थकता का पता चलता है कि मन कितना शक्तिशाली है जो किसी को भी पराजित या विजयी कर सकता है। और ये वास्तविकता भी है कि हमारा मन ऐसा कर सकता है क्योंकि हमारे शास्त्रों में मन को ही बंधन और मन को ही मुक्ति का कारण माना गया है। शुद्ध, शांत, निर्मल और स्थिर मन मनुष्य को उत्कर्ष की ओर ले जाता है वही पर चंचल, अस्थिर कुलषित एवं कुसंस्कारों से भरा हुआ मन मनुष्य को पतन व पराभव के मार्ग पर धकेलता है।

मनुष्य का जीवन परिवर्तनशील है जिस प्रकार मौसम में बदलाव देखने को मिलते हैं ठीक उसी प्रकार मानव-जीवन में निराशा-अवसाद, लाभ-हानि, सफलता-असफलता आते और जाते रहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव-जीवन में कुछ भी स्थिर नहीं रहता। कभी तो काले घटाओं के बादल घिर आते हैं और मनुष्य अवसाद ग्रस्त हो जाता है परंतु थोड़े

ही समय के पश्चात सुखों की बारिश के रूप में मनमोहक इन्द्रधनुष भी मानव-जीवन में आता है जीवन के इन्हीं कड़वे-मीठे अनुभवों से गुजरने का नाम जीवन है। इसलिए जीवन को जीने के लिए मानव को सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। जहाँ अच्छा वक्त हमें खुशी देता है वहीं बुरा वक्त हमें आने वाले भविष्य के लिए सक्षम बनाता है। कुछ लोग अपनी पहली ही असफलता पर हार मान लेते हैं और निराशा के अंधकार में खो जाते हैं। अब्राहम लिंकन के बारे में कौन नहीं जानता उम्र के 52 वर्ष में वे अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए। क्या वे चुनाव हारने के बाद निराश नहीं हुए होंगे? क्या उन्हें अवसाद या निराशा न घेरा होगा? जरूर उन्होंने ने भी इन सब का सामना किया होगा परंतु हिम्मत, सहनशीलता और आत्मविश्वास के कारण ही अंत में वे सफल हुए। मनुष्य ने जिस क्षण स्वयं को कमजोर, लाचार और निर्बल महसूस करना शुरू कर दिया समझो उसी क्षण उसकी हार निश्चित हो जाती है। मानव को दो विकल्पों के बीच सदैव चुनाव करना पड़ता है और यह उसका मानसिक स्तर, उसका विवेक है कि वह क्या चुनता है। मानसिक रूप से सबल और सचेत व्यक्ति सदैव आगे बढ़ने की बात करता है उसके लिए भाग्य जैसी बातें सिर्फ शब्द होते हैं उसे अपने पुरुषार्थ पर विश्वास होता है। वह निराशा में भी आशा की किरण खोज लेते हैं उनके लिए हर वक्त शुरुआत का वक्त होता है।

(4) 'एक अंधे की आत्मकथा'

उस दिन अंधे भिखारी को मंदिर की सीढ़ियों पर न पाकर न जाने क्यों मन विचलित हो गया। पूछने पर पता चला कि वह आज नहीं आया। दिनभर न चाहते हुए भी मैं उसके ही बारे में सोचती रही। और क्यों न हो वह इतना सुरीला गाता था कि कोई भी उसके मोहपाश में बंध सा जाय। सुबह उठने के बाद पहला काम मंदिर जाने का किया और जैसे ही उस भिखारी को देखा मन प्रसन्न हो गया। सीधे उसके पास पहुँची और पूछा, “बाबा कल कहाँ थे?” मुझे आपके बारे में सब-कुछ जानना है। अंधा

मुझसे इस प्यार की भाषा को सुनकर रोने लगा। मैंने उसे सहानुभूति दी तो वह अपने जीवन के पिछले पृष्ठों को परत दर परत खोलने लगा। मैं बचपन से अंधा नहीं था। खाते- पीते किसान घर का बालक था। गाँव की पाठशाला में पढ़ता और खेतों में जमकर मेहनत करता। बड़े हँसी-खुशी से बचपन के दिन गुजर गए। उसके बाद मेरा विवाह पास के ही गाँव की रमा से हुआ और हमारी गृहस्थी की गाड़ी चल पड़ी। जीवन में बड़े उतार- चढ़ाव देखे लेकिन रमा जैसी पत्नी के कारण अकाल ,बाढ़ जैसे सब दिन निकल गए। रमा ने एक साथ चार- चार पुत्रों से मेरी झोली भर दी। बस फिर क्या था उनको बड़ा करने में हम दोनों ने अपना जीवन झोंक। दिन को दिन और रात को रात न समझा अथाह परिश्रम किया और चारों बेटों को सफलता के ऊँचें शिखरों पर पहुँचा दिया। सब के सब विदेश चले गए और जो गए तो आज तक नहीं लौटे और ना ही उन्होंने ने हमारी कोई खबर ली। कुछ समय के पश्चात मोतियाबिंद बढ़ जाने के कारण मुझे अपनी आँखों की रोशनी से हाथ धोना पड़ा। जब तक रमा थी तब तक उसने मुझे किसी तरह की तकलीफ न होने दी। लेकिन हाय रे विधाता! उसे तो कुछ और ही मंजूर था उसने मेरी रमा को मुझसे छीन लिया और मुझे अब इस तरह का जीवन जीने के लिए मजबूर होना पड़ा। विदेश में रहने वाले मेरे बेटों को तो यह भी पता नहीं होगा कि उनका बूढ़ा बाप जिंदा भी है या मर गया है मैं तो कहता हूँ कि ईश्वर ऐसी संतान किसी को न दें।

प्रश्न 6 (य) निम्नलिखित कार्यालयीन तथा व्यावसायिक दो पत्रों में से किसी एक पत्र का लिफाफे सहित नमूना तैयार कीजिए : 4

- (1) मा.स्वास्थ्य अधिकारी, नगर परिषद, कोल्हापुर को संजय / संगीता कोटणीस 45, शिवनेरी, शाहूनगर, खासबाग मैदान, कोल्हापुर से पत्र लिखकर अपने मुहल्ले में बढ़ती गंदगी के बारे में शिकायत करते हुए आवश्यक प्रबंध का अनुरोध करता / करती है।

संगीता कोटणीस,
45, शिवनेरी,
शाहूनगर, खासबाग मैदान,
कोल्हापुर।

दिनांक : 10 जुलाई 2015

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
नगर परिषद,
कोल्हापुर।

विषय : मुहल्ले में बढ़ती गंदगी के बारे में शिकायती पत्र।
माननीय महोदय,
सविनय निवेदन है कि पिछले एक सप्ताह से हमारे मुहल्ले में कूड़ा उठाने वाली गाड़ी नहीं आई है, जिसके कारण सर्वत्र कूड़े के ढेर फैले हुए हैं। भयंकर गंदगी चारों ओर फैली हुई है और दुर्गन्ध के मारे साँस लेना भी दूभर हो गया है, साथ ही मच्छरों का प्रकोप भी बढ़ गया है। बरसात के कारण तो स्थिति और भी बुरी हो गई है सारा कूड़ा सड़क तक फैल चुका है।
अतः आपसे निवेदन है कि जितनी जल्दी हो सके हमें इस गंदगी से छुटकारा दिलाएँ।
धन्यवाद

भवदीय,
संगीता कोटणीस

प्रति,
स्वास्थ्य अधिकारी,
नगर परिषद,
कोल्हापुर।

टिकट

प्रेषिका,
संगीता कोटणीस,
45, शिवनेरी,
शाहूनगर, खासबाग मैदान,
कोल्हापुर।
दिनांक : 10 जुलाई 2015

- (2) अरुण/अरुणा पाटील, माधवबाग, सांगली से मा.व्यस्थापक क्वालिटी स्पोर्ट्स, अप्पा बलवंत चौक को क्रिकेट खेल की सामग्री मँगाते हुए पत्र लिखता/लिखती है।

अरुण पाटील
माधवबाग,
सांगली।
दिनांक : 2 जुलाई 2014

सेवा में,
मा. व्यवस्थापक,
क्वालिटी स्पोर्ट्स,
अप्पा बलवंत चौक।

विषय - खेल की सामग्री मँगवाने के संदर्भ में।

महोदय,
आपका सूचीपत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

मैंने आपकी खेल सामग्री की सूची देखी जिसमें से मुझे कुछ क्रिकेट सम्बन्धी खेल सामग्री की आवश्यकता है। अतः आप सम्बंधित खेल सामान पत्र में ऊपर अंकित पते पर वी.पी.पी. द्वारा भेजने की कृपा करें।

आपके नियमों के अनुसार पेशगी के रूप में तीन सौ रुपये का पोस्टल ऑर्डर इस पत्र के साथ भेजा है। शेष रकम की वी.पी.पी. कर दें, जो यहाँ पहुँचते ही छुड़ा ली जाएगी।

1.	क्रिकेट बल्ले	4
2.	सीज़न बॉल	4
3.	क्रिकेट नेट	1
4.	स्टैंप्स	6

आशा करता हूँ कि आप यह सामग्री जल्द से जल्द भेजने की कृपा करेंगे।

भवदीय,

अरुण पाटील

प्रति,

मा. व्यवस्थापक,

क्वालिटी स्पोर्ट्स,

अप्पा बलवंत चौक।

टिकट

प्रेषक,

अरुण पाटील

माधवबाग,

सांगली,

दिनांक : 2 जुलाई 2014

अथवा

निम्नलिखित विज्ञापन का नमूना तैयार कीजिए :

आपको अपना घर किराए पर देना है - विज्ञापन का प्रारूप तैयार कीजिए।

क्या आप ढूँढ रहे हैं किराये का मकान?



आप की तलाश खत्म हुई

पाईए तीन बेडरूम, हॉल, कीचन का बढ़िया मकान किफ़ायती दाम में

किराया : 20,000 /-

मकान : दिल्ली स्टेशन के सामने

संपर्क करें - मानव शर्मा दूरभाष ४००४ ०५६७८०

(र) निम्नलिखित रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखिए। उसे उचित शीर्षक देकर

यह भी दर्शाइए कि उससे क्या सीख मिलती है :

4

एक कौआ और हंस ____ दोनों में मित्रता ____ दोनों का आकाश में उड़ना
____ सड़क से एक ग्वाले का दधि पात्र लेकर गुजरते हुए देखना ____ कौए
का पात्र पर चुपचाप बैठकर दही खाने का आग्रह ____ हंस का इनकार ____
कौए का घसीटकर ले आना ____ कौए का चोंच नचाकर दही का स्वाद लेना
____ हंस का बैठे रहना ____ कौए का आहट पाकर उड़ जाना ____ हंस का
पकड़ा जाना ____ परिणाम।

एक बार एक कौए और हंस में गहरी मित्रता थी। दोनों हमेशा साथ-साथ ही रहते थे। एक बार दोनों रोज की तरह आकाश की सैर का आनंद ले रहे थे कि कौए की नजर सड़क पर दधि पात्र लेकर जा रहे एक ग्वाले पर पड़ती है। दधि को देखकर कौए के मुँह में पानी भर आता है। वह हंस को दधि खाने के लिए उकसाता है परंतु हंस को यह सही नहीं लगता और वह कौए की बात मानने से इंकार कर देता है। कौआ जबरदस्ती हंस को अपने

साथ ले जाता है। कौवा दधि पात्र के ऊपर बैठकर दधि का आनंद लेने लगता है। ग्वाले को थोड़ी देर बाद अहसास होता है कि उसके दधि पात्र के ऊपर कोई बैठा है इसलिए जब वह देखने का प्रयास करता है तो उसकी आहट पाकर कौआ तो उड़ जाता है है लेकिन हंस फँस जाता है और ग्वाला उसे पकड़ लेता है।

सीख : स्वार्थी और कपटी मित्र से दूर रहना चाहिए।

- (ल) निम्नलिखित अपठित गद्य-खंड पर आकलन हेतु चार ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :

4

वार्तालाप की शिष्टता मनुष्य को आदर का भाजन बनाती है और समाज में उसकी सफलता के लिए रास्ता साफ कर देती है। मनुष्य का समाज पर जो प्रभाव पड़ता है, वह कुछ अंश में उसकी उसकी पोशाक और चाल-ढाल पर निर्भर रहता है, किंतु विष भरे कनकघटों की संसार में कमी नहीं है। यह प्रभाव ऊपरी होता है और पोशाक का मान जब तक भाव से पुष्ट नहीं होता है, तब तक स्थायी नहीं होता। मधुरभाषी के लिए करनी और कथनी का साम्य आवश्यक है, किंतु कर्म के लिए वचन पहली सीढ़ी है। मधुर वचन ही उत्पन्न कर भय और आतंक का परिमार्जन कर देते हैं। कटुभाषी लोगों से लोग हृदय खोलकर बात करने से डरते हैं। सामाजिक व्यवहार के लिए विचारों का आदान-प्रदान आवश्यक है। और वह भाषा की शिष्टता और स्पष्टता के बिना प्राप्त नहीं होता। भाषा की सार्थकता इसी में है कि वह दूसरों पर यथेष्ट प्रभाव डाल सके। जब बुरे वचन आदमी को रुष्ट कर सकते हैं तो मधुर वचन दूसरे को प्रसन्न भी कर सकते हैं। शब्दों का जादू बड़ा जबर्दस्त होता है।

- (1) मनुष्य समाज में सफलता और आदर कैसे पा सकता है?
- (2) मधुर भाषी के लिए क्या आवश्यक है?
- (3) सामाजिक व्यवहार के लिए क्या आवश्यक है?
- (4) भाषा की सार्थकता किसमें है?